**मदरसा शिक्षा और सुधार**

1. मदरसा किसे कहते है? मदरसा अरवी भाषा का लफ्ज है जिसका मतलब होता है पाढ़शाला या पढ़ाई करने की जगह। जहाँ दीनी तालीम के साथ- साथ दुनियावी/ आधुनिक तालीम भी दी जाती रही है। मदरसे शुरू से ही इस्लामा संस्कृत और सभ्यता के अभिन्न भाग रहे है। मदरसो से इस्लाम की तवलीग और प्रसार- प्रचार भई किया जाता रहा है। शुरू मे मदरसे मस्जिदों खान का हो दरगाहों सराओं शाही भवनों सरकारी दफ्तरों, और निजी मकानों मे चलाये जाते थे। मदरसा से मिलता जुलता एक लफ्ज और मकतब और मदरसा—अंतर- मकतव – प्राथमरीय वेसिक शिक्षा- शुरूवाती तालीम हेतु मदरसे—प्राथमरी व उच्च शिक्षा दोनो दी जाती थी। सबसे बड़ा मदरसा—जामिसा, अल अजरह, काटिरा मिश्रा।
2. **मदरसों का विकाश—या शुरुवात कैसे हुई**?

**मकसद—**1. इस्लाम के प्रचार व प्रसार के लिए (तवलीग) 2. इस्लामी सिध्दातों जैसे- कुरान, हदीश, फिकह, रोजा, नमाज, हज, जकात, शरीअत आदि को सिखाने जानने व बताने हेतु। मौलाना मनजिर अहसान गिलानी ने अपनी मशहूर किताब हिन्दुस्तान मे मुसलमानों का निजाम-ए-तालीम व तरवियत में लिखा है कि जहाँ कोई आलिम या विद्वान वैढ कर पढ़ाना शुरू कर देता था, वह मदरसा बन जाता था। इसी तरह मशहूर इस्लामी विद्वान अस्लामा शिवली नोमानी ने अपनी किताब-ज मकलात-ए-शिवली मे लिखा है कि शुरू में मदरसे एक आलिम या विद्वान के नाम से हुआ करते थे वे जहाँ भी बैढ़ते थे वह मदरसा बन जाता था, जिसके चारो ओर छात्रों और ज्ञान के साधनों का विशाल जमावड़ा हो जाता था। धीरे धीरे यह जगह मदरसो मे तब्दील हो जाती थी।

**विकास-** **भारत मे—**इस्लामी सामाज्यवाद- के विकास यानी इस्लाम मनहव के दुनिया के अन्य मुल्को मे प्रचार प्रसार करे साथ- साथ मदरसो का भी विकास होना शुरू हो गया। ह0 मु0 स0 की वफात के बाद खलीफाओं के वक्त मे बड़ी तेजी के साथ इस्लाम दुनियां के कोने- कोने में फैलता गया. उम्मैया खलीफाओं, अब्बासी खलीफाओं व इस्लामी खलीफाओं की धर्मान्धता और कट्टरता तथा बदला लेने की कार्यशैली ने मध्य एशिया से सूफी संतों व कतिपथ मुस्लिम विद्वानो को भारत मे शरण लेने पर मजबूर कर दिया था। कुछ सूफी संत व मुस्लिम विद्वान विदेशी हमलावरों जैसे महमूदगजनवी, मु0 विनकार्सिम, गोरी, ऐवक, बाबर व हुमायूं के साथ भारत आये और इस्लामी शिक्षा का पढ़न- पाढन शुरू कर दिये। कुछ सुफी व विद्वान अरब व्यापारियों के साथ भी दक्षिण भारत मे आये और बाद मे पूरे भारत मे फैल गये।

**राष्ट्रिय भारत—**भारत मे मदरसों की शुरूवात सबसे पहले 7वी व 8वी सदी में अरब ताजिरों द्वारा केरल के मालावार तट पर शुरू की गयी। ये अरब व्यापारी नये नये इस्लाम कबूल किया थे जिनमे इस्लाम को लेकर ज्यादा उत्साह भरा हुआ था। इनको पूजा पाठ़ के लिए मस्जिदो की दरकार थी। सबसे पहली मास्जिद—आधुनिक त्रिशूर जिले मे उस समय के राजा चेरामन पेरूमल की अनुमति से मलिक दीनार ने 629 ए0 डी0 मे ह0 मु0 स0 के जीवन काल मे ही तामीर कराया था। जो आज भी है। इसके वाद जगह जगह मस्जदे बनायी गयी। और इन्ही मास्जिदों मे मदरसे संचालित किये जाने लगे। **सूफी संतो व विद्वानो ने मदरसा पद्धति मे काफी योगदान किया उत्तर भारत मुस्लिम हमलावरो कासिम गोरी गजनवी बाबर के साथ संत व विद्वान आये जिन्होने मस्जिदे बनायी जहाँ से मदरसों का विकास शुरू हुआ।**

**उत्तरी भारत** मे सल्तनतकाल व मुगलकाल की स्थापना के बाद मदरसों का विकास बहुत तेजी से हुआ। मान्यता है कि भारत मे पहले मदरसों की स्थापना गोरी के वक्त मे 1192 मे अजमेर मे हुई। सल्तनत युग का आज कोई भी स्वतंत्र अस्तिव वाला कोई भी मदरसा मौजूद नही है। बाबर अपनी आत्माकथा तुजुक-ए-बाबरी मे लिखता है कि यहाँ कोई मदरसा नही है। और न ही कोई हमाम है। इससे ज्ञात होता कि No. Free existed मदरसा। सल्तनत व मुगलकाल मे सरकारी खजाने से वेतन दिया जाता था।

**आधुनिक युग मे मदरसें—(व्रिटिश काल )—**भारत मे अंग्रेजी हुकुमत के शुरूवाती सालों तक मदरसा शिक्षा प्रद्धति ज्यो कि त्यों बनी रही। उल्लेखनीय है कि इस समय तक भारत में सरकारी काम काज की भाषा फारसी थी। फौजदारी कानूनो मे शरीअत ला लागू था। फौजदारी मामले की सुनवाई काजी द्वारा मुफ्ती की सलाह से की जाती थी। दीवानी व पारिवारिक मामलों मे सभी धर्मो के प्रसनल ला से फैसले किये जाते थे। (1860 में आई0 पी0 सी0 लागू कर फौजदारी मामलों से शरीया कानून हटाकर सम्पूर्ण भारत में एक समान फौजदारी कानून सभी धर्मों के मानने वालों पर लागू कर दिया गया।) फौजदारी मामलों मे शरीआ लागू होने की वजह से भारी संख्या मे काजी मुफ्ती व दिगर ऐसे लोगो की दरकार थी जो फारसी दी थी। इसीलिए अंग्रजो न शुरू मे मदरसा शिक्षा को पूर्व की भांति जारी ही नही रखा बल्कि सरकार की तरफ से भी मदरसे स्थापित किये गये थे। गवर्नर जनरल वारेन हेल्टिग ने 1781 ए0 डी0 मे कलकत्ता मे पहला मदरसा स्थापित (कायम) किया था। जिसका नाम कलकत्ता मदरसा था। 1835 मे लार्ड विलियम वेंटिक ने फारसी की जगह अंग्रेजी को सरकारी भाषा घोषित कर दिया। 1844 मे लार्डहाडिग ने मदरसों से पास आउट बच्चो को सरकारी नौकरी मे भर्ती होने पर रोक लगा दिया। तथा सरकारी खजाने से वेतन दिया जाना बंद कर दिया गया। अंग्रजों के उपरोक्त फैसले दो दूरगामी परिणाम हुए।

**मदरसा**

**प्रथम- फारसी भाषा,** काजी मुफ्ती, उलेमा का महत्व कम हो गया। **दूसरे-** अंग्रजो के उपरोक्त फैसले का मजहवी नेताओं उलेमाओं द्वारा कड़ा विरोध किया गया। उपरोक्त फैसले से इस्लाम को खतरे तथा मजहब मे हस्तक्षेप माना गया। विरोध स्वरूप अलेमाओं मौलानाओं द्वारा अंग्रेजी भाषा का विरोध व वहिष्कार किया गया तथा अंग्रेजी न पढ़ने की तवलीग की गयी। बदले मे भारी संख्या में स्वतंत्र अस्तित्व वाये मदरसों की स्थापना मुसलमानों द्वारा की जाने लगी। “All appointment in public services were to be given to those, who had a knowledge of English education,, By lord Harding”

1866-67 मे दारूल वलूम देबवंद मदरसा की स्थापना। 1878 में मुल्ला निजामुद्दीन ने मदरसा फिरंगी महल लखनऊ मे कायम किया। 1898 मे लखनऊ मे दारूल वलूम वदवतुल उलेमा की स्थापना मुहम्मद अली मुंगेरी द्वारा की गयी। जिसे अंग्रेजी में House of knowledge and assembly of & dollars कहा जाता है। मदरसा मजरे इस्लाम की स्थापना 1904 मे अहमद रजा खान ने किया। खासकर 1857 के बाद मदरसो को कायम करने का खास मकसद पश्चिमी सभ्यता और शिक्षा संस्कृति के हमले से इस्लाम व मुसलमानों की रक्षा करना तथा इस्लामी शिक्षा और संस्कृति का प्रचार – प्रसार करना था। भारत व पाक तमाम शहरों मे मदरसे कायम किये गये। यही से मदरसो मे कट्टरता शुरू हो गयी। अब मदरसो का स्वरूप धर्म निर्पेक्ष न होकर जो ब्रिटिशकाल मे था धार्मिक शिक्षा तक सीमित हो गया। अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी शिक्षा और संस्कृति की मुखाकफत उलेमा हजरात बड़ी शुद्दत से करने लगे। साथ-साथ मजहवी तालीम अरवी, उर्दू, फारसी, हरीश, कुरान व शरीअत की तालीम को ज्यादा से ज्यादा तरजीह दी जाने लगी। जो कमोवेश आज तक जारी है। English व Nesters culture के खिलाफ फतवा भी जारी किया गया। यही से मुसलमानों की गरीबी, अशिक्षा और पिछड़ेपन की शुरूवात होती है। 1866 मे सहारनपुर मे कायम मदरसे दारूक उलूम देववंद को उस वक्त के मुसलमानो ने व्रिटिश भारत के पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण के खिलाफ – इस्लाम का किला कहा था। तथा अंग्रजी शिक्षा और विज्ञान को इस्लाम का दुश्मन करार दिया था। 1919 मे जमीअत- उलमाय हिन्द की स्थापना की गयी जो देववंद मदरसे को चलाता है। कमावेश आज भी सभी मदरसा दारूल वलूम देवबंद की पुरवी सोच बनी हुई है। अरशद मदनी साहब की हालिसा तवरीरों और वमानो से साफ होता है।

**यू0 पी0 मदरसा दो तरह के है—**

विशेषता या खाशियत मदरसो की गैरमान्यता प्राप्त—

गैरमान्यता प्राप्त मदरसे—या बड़े पैमाने पर था छोटे कमरो मे। मस्जिदो प्राईवेट मकानों मे संचालित किये जाते है। word Islamic chari table organisation N I I Gultcouting, दान देते है। संचालन जकात दान खैरात से होता है। ज्यादातर Unregistered मदरसो मे दीनी तालीम दी जाती है। जैसे कुरान, हरीश, फिरह, शरीअत, उर्दू, फरिकी आदि इनके Syllabus, Broke, largess व अवस्थापना सुविधाओं मे कोई uniformity नही है। Trained व Degree Holders शिक्षको का अभाव। डिग्री- मौलाना हाफिज, कारी, युक्ती बगैरह। गैरमान्यता प्राप्त मदरसों मे आधुनिक शिक्षा न केनरानर दी जाती है। अधिकतर इन मदरसो मे बच्चे पढ़ते है- बच्चियां न के बराबर (Co- Education)। 80 फीसद बच्चे यतीम- गरीबी परिवारों से आते है। बड़े गैरमान्यता प्राप्त अधिकतर मदरसे आवासीय होते है, जहाँ कपड़ा, खाना, दवा, किताबे मुक्त दी जाती है। इनका सचालन अमीर लोग करते है। संचालन कर्ताओं और मदर्रिशो के बच्चे भी इन मदरसो मे नही पढ़ते। अब हम आज के दौर मे मदरसो के हालात का जायजा लेंगे।

**आज के मदरसे या अधुनिक काल के मदरसे—**भारत वर्ष खासकर उत्तर प्रदेश मे तीन तरह के मदरसे संचालित है।

1. मान्यता प्राप्त मदरसे 1-Syllabus डिग्रीया Book course united सकता है।
2. गैर मान्यता प्राप्त मदरसे C- No- uniformity
3. अनुदानिक मान्यता प्राप्त मदरसे Syllabus डिग्री pores समान

**भारत के कुछ बड़े गैर मान्यता प्राप्त मदरसे—**

**Syllabus पाढ़यक्रम व डिग्री—**मान्यता प्राप्त मदरसे उनको कहते है जो मदरसा शिक्षा परिषद से पंजीकृत होकर समदृ होते है। इनका पाढ़यक्रम डिग्रीया किताबे युनिफोर्म अवस्था पर सुविधाये समान होती है। कुछ मान्यता प्राप्त मदरसो की सरकार वेतन अनुदान देती है जिन्हे अनुदानित मदरसे कहा जाता है। इन मदरसो मे दोनो तालीम के साथ साथ अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर आदि। पास आउट होने पर इनमे पढ़ने वाले बच्चों को तहतानिया (प्रायमरी) फौहानिया (अपर प्रायमरी) जूनि0 हाईस्कूल ।

 मुंशी/ मौलवी - हाईस्कूल

 आलिम - इण्टर मीडिएट

 कामिल - बी0 ए0

 फाजिल - एम0 ए0 की डिग्री दी जाती है।

**यू0 पी0 मे मदरसों से सम्बन्धित सरकारी विभाग—**

1. अल्पसंख्यक कल्याण एवं वम्फ विभाग—इसके तहत मदरसा का संचालन होता है। शासन मदरसो के संचालन के लिए कानून/शासन देश जारी करता है।
2. अल्पसंख्यक कल्याण निदेशालय—
3. उत्तर प्रदेश मदरसा शिक्षा Counsel Act. 2004 U.P. madarsa Education counsel Act. 2004—यह Act U.P. government द्वारा 2004 में पारित किया गया। इस अधिनियम की धारा 3 (1) मे एक परिषद के गठन का प्रविजन किया गया है।
4. उत्तर प्रदेश मदरसा शिक्षा परिषद का 2007 संगठन उपरोक्त एक्ट की धारा 3(1) के अनुसार इस परिषद संचालन का सम्पूर्ण कार्य वर्तमान मे इसी Counsel द्वारा किया जाता है। मदरसो की मान्यता भी Counsel द्वारा दी जाती है।
5. U.P. NON Govt ARABIC and Persian Recognition Administration and service Regution for Reorganization standards and condition Rule 2016:-

मदरसा शिक्षा परिषद इसी उपरोक्त नियमावली 2016 के अनुसार प्रदेश के सभी मदरसे संचालित किये जाते है।

1. मान्यता प्राप्त मदरसो का आधुनिकीकरण एवं सरकारी प्रयास— मदरसो के आधुनिकीकरण और सुधार के लिए वर्ष 2004 मे केन्द्र सरकारा ने पहली बार (NMCHI) National Monitoring Committee for Mennonites Education का गठ़न किया था। इस समिति को मदरसो का सर्वो और अध्ययन कर सुधार और आधुनिकीकरण हेतु सुझाव देने थे। Control sponsored scheme for providing quality Education in morasses—यह योजना भारत सरकार द्वारा 2009 मे आरम्भ की गयी थी।

Madarsa Madernisation Seheme:-- यह India Govt भारत सरकार द्वारा संचालित योजना है। इसके तहत मदरसो मे तीन अतिरिक्त शिक्षक रखे जाते है जिनको सरकार अतिरिक्त मानदेय देती है। अब आईये देखते हैं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा क्या कोशिश की गयी है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किया गया प्रयास—विगत सालो मे मा0 सी0 एम0 योगी द्वारा मदरसो को आधुनिक बनाने हेतु अनेको प्रयास किये गये है जो निम्न है।

1. CBSE व UP वोर्ड की तर्ज पर मदरसा शिक्षा परिषद प्रतेक वर्ष समय से मदरसो मे वार्षिक परीक्षा आयोजित कराकर समय से रिजेल्ट घोषित किया जाता है। इसके पूर्व सालो तक परीक्षायें आयोजित नही होती थी।
2. मा0 योगी जी के निदेशानुसार अब मदरसो मे नया CBSE को पाठ्यक्रम लागू कर CBSE की बुक पढ़ाई जा रही है।
3. अनुदानित मदरसो में मुक्त CBSE की किताबें वितरित की जाती है।
4. अब मदरसो मे अंग्रेजी हिन्दी, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर आदि की भी शिक्षा दी जा रही है।
5. वर्तमान मे Madarsa modernisation sheme के तहत प्रदेश मे कुल 7442 मदरसो को अनुदान दिया जा रहा है।
6. प्रदेश मे लगभग 124 मदरसो मे मिनी आई0 टी0 आई0 योजना लागू की गयी थी।
7. **मदरसा पोर्टल—**वर्ष 2017 में एक मदरसा पोर्टल लंच किया गया है। इस पोर्टल पर रेजिस्टरड मदरसो से सम्बन्धित समस्त विवरण दर्ज है। कोई भी व्यक्ति लोगिन कर किसी भी मदरसे का सम्पूर्ण विवरण देख सकता है। भ्रष्टाचार रोकने व पारदर्शिता लाने मे यह मील का पत्थर साहिल हुआ है। इस पोर्टल के पूर्व प्रदेश मे मदरसो की संख्या 19123 थी लंच होने के बाद 16513 रह गयी है।
8. मदरसो मे अब कसा एक से लेकर 12 तक अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर, इतिहास, नागरिक शास्त्र आदि की शिक्षा दिया जाना अनिवार्य कर दिया गया है। इससे पूर्व हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी ही अनिवार्य सवजेक्त थे।
9. अब मदरसों मे शुक्रवार के स्थान पर रविवार को छुट्टी घोषित।
10. मदरसो मे प्रातः काल की रामाओं मे राष्ट्रगान अनिवार्य।